02

गंगा के स्थान और श्रेत्र

प्रयागराज में यमुना नदी

बोधगया में महाबोधि मंदिर

वाराणसी में मणिकर्णिका घाट

गंगा के महत्वपूर्ण स्थान तथा क्षेत्र

ऊपर दर्शायी हुई छवि *- ऋषिकेश में बीटल्स आश्रम मे आईआईपीए द्वारा लिया गया चित्र।*

क्षेत्र कोई भी हो अपनी संरचना वह स्वयं निर्मित करता है। लोग किसी स्थान को इस इरादे से संरचित करते हैं ताकि वे उन दूसरे लोगों पर प्रभाव डाल सकें जो वहां रहते हैं। अधिकांश भाग के लिए, क्षेत्र और प्रसार, दो अलग-अलग सिद्धांत हैं। हालाँकि, एक बिंदु है जिस पर क्षेत्र और प्रसार विलीन हो जाते हैं। मनुष्यों द्वारा नए स्थानों पर कब्जा करने और तलाशने की इच्छा ही बसे हुए स्थानों के निर्माण को प्रेरित करती है। कोई स्थान वहां की वास्तुकला का एक आवश्यक उपकरण है जिसका उपयोग वातावरण बनाने के लिए किया जाता है जो हमें हमारी बाहरी वास्तविकता से अवगत कराता है। जिस तरह से हम अपने शरीर को हिलाते हैं और वस्तुओं को संभालते हैं या आवागमन करते हैं, उनसे उस स्थान के बारे में पता चलता है। जब कोई स्थान सामाजिक, सांस्कृतिक या भावनात्मक अर्थ प्राप्त करता है, तो यह एक 'क्षेत्र' बन जाता है। हम किसी क्षेत्र को एक ऐसे वातावरण के रूप में समझ सकते हैं जहाँ घटनाएं घटित होती हैं।

फलस्वरूप इसे एक उद्देश्य प्रदान किया जाता है। गंगा नदी के किनारो में कई हजार स्थान हैं जो बड़े/छोटे , खुले/बंद; सार्वजनिक /निजी , संस्थागत/ मनोरंजक, प्राकृतिक/मानव मूल्यों के साथ निर्मित,ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थानों में बदल गए हैं ये कई स्थान स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं व राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा जीवन और प्रेरणा के अपूरणीय स्रोतों के रूप में पहचाने जाते हैं।

"मुझे नहीं लगता कि किसी विशेष क्षेत्र से विशेष लगाव केबिना इस धरती पर मानवीय पराणी केरूप में जीवित रहा जा सकता है"

लुईस

जगह
एक सतत क्षेत्र या विस्तार है जो मुक्त है, उपलब्ध है या जिस पर दस्ता नहीं हुआ है।

स्थान
किसी व्यक्ति द्वारा निर्दिष्ट या उपलब्ध या उपयोग किए जाने वाले स्थान का एक भाग।

विरासत
विरासत अतीत से प्राप्त हमारी धरोहर है, जिसे हम वर्तमान में जीते हैं, और जो हम भावी पीढ़ियों को देते हैं।

अधिक जानकारी के लिए

स्कैन कोड

गंगा नदी के किनारे प्रागैतिहासिक स्थल

गंगा बेसिन में समृद्ध पुरातात्विक विरासत मौजूद है। प्राचीन काल से ही गंगा नदी के किनारे बसा सभ्यता का इतिहास इसके महत्व एवं प्रतिष्ठा को प्रमाणित करता है। लोग कृषि और व्यापार के लिए गंगा नदी पर निर्भर रहते हैं। प्रागैतिहासिक स्थल, प्राचीन काल से ही नदी की भूमिका के प्रमाण स्वरुप विद्यमान हैं। नदी के प्रवाह में तीव्र और अत्यधिक परिवर्तन के कारण गंगा बेसिन सभ्यता की खोज अभी भी शेष है।

उपरोक्त छवि - सारनाथ में पुरातत्व अवशेष

पहला चरण ग्रे वेयर चित्रण (पीजीडब्ल्यू)

अवधि

1,000/800 - 500 ई.पू. यह अपने उत्कृष्ट सिरेमिक रूपों केलिए जाना जाता है और यह पिश्चमी उत्तर परदेश केस्थलों में पाया जाता हैं।

यमुना नदी पर गंगा बेसिन कौशांबी से ठोस साक्ष्य पराप्त हुए हैं। हिस्तनापुर और आलमगीरपुर में मिटटी और मिटटी से बनी ईंट की दीवार केसाक्ष्य मोटी मिटटी की परतों से ढले हैं। हिस्तनापुर, मवेशियों और घोड़ों केपालन और चावल की खेती केबारे में जाना जाता है। इसकेअलावा इस चरण केदौरान किए गए अन्वेषण से भारत में सबसे पहले ज्ञात लोहे की वस्तुओं केबारे में पता चलता है| इस सभ्यता में लोगों को धातु संबंधी कायर एवं ज्ञान की समझ थी। उत्तर परदेश केएटा जिले में एक साइट में, अतरंजीखेड़ा में चितिरत गरे वेयर काल की परारंभिक अवधि से, अभिलेखों में लोहे की वस्तुओं केबारे में जानकारी दी गई है उत्खनन में वतरमान समय की भटटी जैसी संरचनाओं की भी जानकारी मिली है।

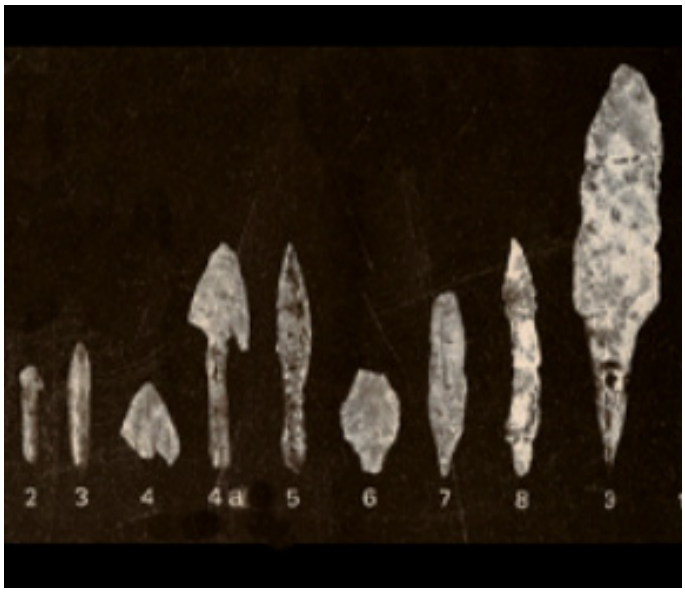

ऊपर की छवि - पीजीडब्ल्यू स्तर, अतरंजीखेड़ा, यूपी, भारत से लोहे की वस्तुएं

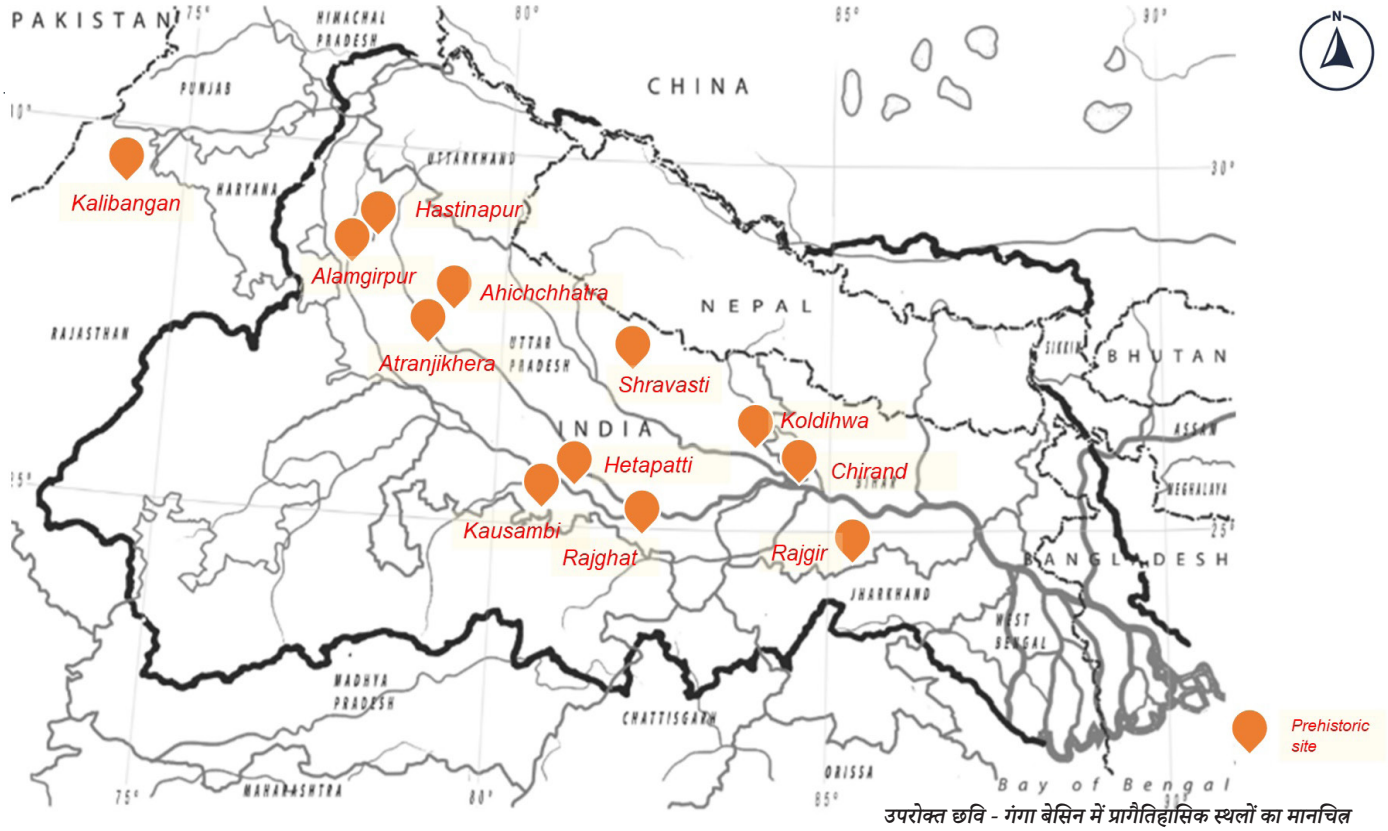

उपरोक्त छवि - गंगा बेसिन में प्रागैतिहासिक स्थलों का मानचित्र

दूसरा चरण **उत्तरी ब्लैक पॉलिश्ड वेयर (एनबीपीडब्ल्यू)**

अवधि

500-200 ई.पू. पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के बीच और पीजीडब्ल्यू चरण के अंत से पहले, उन्नत तकनीक और अनुमानत: शहरी जीवन की शुरुआत के आरंभिक संकेत मिले। ये लगभग 500-200 ईसा पूर्व की समयावधि में सुस्पष्ट थे, और एक विशिष्ट सिरेमिक उद्योग द्वारा लोकप्रिय रूप से विख्यात है. इस अवधि को उत्तरी ब्लैक पॉलिश वेयर (एनबीपीडब्ल्यू) के रूप में जाना जाता है। एनबीपीडब्ल्यू के कटोरे और शेर्ड और अहिच्छत्र, वैशाली, श्रावस्ती, राजगृह और राजघाट की शहर की दीवारों का निर्माण एक ही कालखंड में हुआ है। राजघाट पर एनबीपीडब्ल्यू और प्लेन ब्लैक-स्लिप्ड वेयर (पीबीएसडब्ल्यू) के बीच एक संक्रमण देखा गया है, जो कि उत्तरी ब्लैक पॉलिश्ड वेयर का परिपक्व रूप है। पूर्व-एनबीपीडब्ल्यू और एनबीपीडब्ल्यू के बीच टेराकोटा मूर्तियों के बीच एक महत्वपूर्ण बदलाव विशेष रूप से, कई महिला मूर्तियों में एक बड़ी विविधता को दर्शाता है।

अधिक जानकारी के लिए

स्कैन कोड

ऊपर दशारयी हुई छवि - 1944 में खुदाई केदौरान अहिच्छतर केटीलों में से एक। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण केसौजन्य से। | theartofsouthasia.com

"गंगा मेरे लिए भारत के स्मरणीय अतीत
प्रवाह शील वर्तमान और सागर विलीन होने वाले भविष्य का प्रतीक है।"

जवाहरलाल नेहरू, भारत के प्रथम प्रधान मंत्री

ऊपर की छवि - बिहार में चिरंद की सुरंग संरचना | डीडी बिहार

उपरोक्त छवि - हेटापट्टी में मानव अंत्येष्टि सौजन्य - ज्ञान के संवर्धन के लिए राष्ट्रीय ट्रस्ट

चिरान्द

भारत के बिहार के सारण जिले में यह पुरातात्विक स्थल, गंगा नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। प्रागैतिहासिक टीला जो नवपाषाण युग (लगभग 2500-1345 ईसा पूर्व) से अपने निरंतर पुरातात्विक रिकॉर्ड के लिए जाना जाता है। कुछ अन्य स्थल सोनपुर, राजार धिपी और महिसादल में हैं।

हेटापटटी

यह स्थल गंगा-विध्य क्षेतर केकृषि और सांस्कृतिक संदभर के रकार को दशारती है। इस स्थल से हाथ से बने मिटटी केबतरनों में बेसिन, टोंटीदार और सजे हुए बेसिन, विभिन्न आकार केजार, उथले और गहरे कटोरे, जानवरो की हिडडयाँ, ब्लेड और कम बहुमूल्य रत्न , क्नर, मुलर केटुकड़े और माइकरोलिथ आदि की खोज की गई थी।

ऊपर की छवि - कालीबंगा शहर की पूर्व हड़प्पा संरचनाएं सौजन्य - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

उपरोक्त छवि - राजघाट पर प्रारंभिक उत्खनन कार्य सौजन्य - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

कालीबंगा

घग्गर (घग्गर-हकरा नदी) के बाएं या दक्षिणी तट पर स्थित एक प्राचीन शहर। सिंधु घाटी सभ्यता के प्रागैतिहासिक और पूर्व-मौर्य चरित्र की पहचान सबसे पहले लुइगी टेसिटोरी ने इस स्थल पर की थी। कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता की एक प्रमुख प्रांतीय राजधानी थी। कालीबंगा अपनी अनूठी अग्नि वेदियों और "दुनिया के सबसे पुराने प्रमाणित सिंचित कृषिक्षेत्र " के लिए प्रमाणित रूप से प्रख्यात है। यह लगभग 2900 ईसा पूर्व का समय होगा जब कालीबंगा का क्षेत्र विकसित हुआ जिसे एक नियोजित शहर माना जा सकता है।

राजघाट

वतरमान में इसे वाराणसी (बनारस) के नाम से भी जाना जाता है, यह मालवीय पुल है, जो गंगा में फैला है। यहां की खुदाई से काशी केस्थल के800 ईसा पूवर पुराना होने का पता चला है, शहर के एक बड़े हिस्से में खुदाई का कायर नही हुआ है।

मौयर और गढ़ावला काल केयहां मिले शिलालेखों से हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि राजघाट को वाराणसी में सबसे पवितर स्थानों में से एक माना जाता था।

ऊपर की छवि: राजगीर में अजातशत्रु किला/ सौजय ffo.gov.in

ऊपर की छवि - कॉर्ड-इंप्रेस्ड पॉटरी, कोल्डिहवा|हजारिका, मंजिल

राजगीर/गिरिवराज

भारत के बिहार राज्य के नालंदा जिले में एक प्राचीन शहर और अधिसूचित क्षेत्र। यह मगध राज्य की पहली राजधानी थी। शहर का उल्लेख भारत के सबसे महान साहित्यिक महाकाव्य महाभारत में अपने राजा जरासंध के माध्यम से मिलता है। शहर में लगभग 1000 ईसा पूर्व के सिरेमिक पाए गए हैं। 2,500 साल पुरानी प्रसिद्ध साइक्लोपियन वॉल शहर में स्थित है। यह 20वें जैन तीर्थंकर मुनिसुव्रत का जन्मस्थान ,अरिहंत महावीर और गौतम बुद्ध से जुड़ा हुआ है।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय राजगीर के आसपास के क्षेत्र में स्थित था।

कोल्डिह्वा

साइट लगभग 80 किमी की दूरी पर स्थित है। इलाहाबाद शहर के दक्षिण-पूवर के बाएं किनारे पर इलाहाबाद जिले में बेलन नदी। उत्खनन से पता चला कि 1.90 मीटर मोटी बस्ती जमा तीन सांस्कृतिक काल में विभाजित है -
ए) नवपाषाण;
बी) तामरपाषाण;
ग) लौह युग
अवशेषों का संगरह, मिटटी केबतरन, माइकरोलिथ, मुलर, शापरनर, क्वानर, हडडी केऔजार, तांबे केटुकड़े, टेराकोटा केमोती, पत्थर और मिटटी केबतरनों केडिस्क, पौधे और जीव अवशेष।

चोपानी मांडो, कोल्डिहवा, और कई अन्य स्थानों से स्थानीय जनसमुदाय का पत्थर पर काम करने और उपलब्धता के प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाए हैं। कैमूर रेंज में कम बहुमूल्य रत्नों का समृद्ध भंडार था। वाराणसी के पास स्थित मिर्जापुर जिले में साधारण और कम बहुमूल्य दोनों प्रकार के रत्न मिले हैं।

राजघाट की सबसे पुरानी पुरातात्विक परत को 800 ईसा पूर्व के रूप में मान्यता दी गई है। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र के ताम्रपाषाण काल से संबंधित है। पास के अक्था में, दो अलग-अलग, भूरे एवं काले रंग के चीनी मिट्टी के बर्तन पाए गए हैं।

पूर्व-लोहा और प्रारंभिक लौह-उपयोग संस्कृतियों के संदर्भ में मिट्टी के बर्तन पाए गए हैं। इन दोनों का आंकलन 1400/1300- 800/700 ईसा पूर्व की समय सीमा में किया जा सकता है। चिलित चीनी मिट्टी के बर्तन की किस्म एक पूर्व-लौह संस्कृति थी जिसे ताम्रपाषाण संस्कृति के रूप में प्रस्तावित किया गया है और बिना रंगे हुए सिरेमिक वेयर होर्ड लोहे का उपयोग करने वाले समूहों से संबद्ध रखता था। कांच निर्माण का कार्य गंगा के मैदानों में किया जाता थां।

उत्खनन

भूमि के एक टुकड़े से सावधानीपूवरक मिटटी को हटा दें और अतीत के बारे में जानकारी पराप्त करने के लिए बतरन, हिड्डयाँ, या इमारतें जो वहाँ दफन हैं, की तलाश करें।

परागितिहास

इतिहास में किसी भी जानकारी को लिखने से पहले का समय।

पुरातत्व

अतीत के समाजों और लोगों की इमारतों, औजारों और अन्य वस्तुओं के अवशेषों की जांच करके उनका अध्ययन करना।

अधिक जानकारी केलिए

स्कैन कोड

गंगा बेसिन में विश्व धरोहर स्थल

एक विश्व धरोहर स्थल संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा कानूनी संरक्षण वाला एक मील का पत्थर या क्षेत्र है। यहाँ के स्थलों में दुनिया के समस्त सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत शामिल हैं जिन्हें मानवता के लिए उत्कृष्ट मूल्य माना जाता है। भारत की संस्कृति वास्तव में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत और इसके विश्व धरोहर स्थलों के लोकाचार को दर्शाती है, जो अमूल्य खजाने के प्रमाण हैं। यहां भारत में, गंगा बेसिन विरासत की विविधता के साथ सबसे बड़े भू-राजनीतिक विस्तार में से एक है। यह अच्छी तरह से स्थापित है कि, ऐतिहासिक रूप से, यह क्षेत्र कई सभ्यताओं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र बिंदु था और इसने इतिहास के विभिन्न चरणों में कई धर्मों को स्थान दिया। विचारों और विश्वासों को आत्मसात करने की संस्कृति विश्व धरोहर स्थलों की वर्तमान श्रृंखला में परिलक्षित होती है जो गंगा बेसिन को पुरातन विविधता और कलात्मक उत्कृष्टता के भंडार के रूप में स्थापित करती है। इनमें से कई साइटों की एक अनूठी विशेषता सदियों से उनकी निरंतरता है; सदियों पुरानी परंपराएं जो इसकी जीवित विरासत का प्रतीक हैं, आज भी चलन में हैं, चाहे वह बोधगया में बौद्ध महाबोधि मंदिर हो या आगरा में ताजमहल के प्रतिष्ठित स्थल पर मस्जिद। हालांकि गंगा बेसिन से 16 विश्व धरोहर स्थल सूची में व्यक्तिगत रूप से अंकित हैं, वे सामूहिक रूप से एक ऐतिहासिक कथा में योगदान करते हैं।

ऊपर की छवि - खांगचेंदज़ोंगा राष्ट्रीय उद्यान: बोकटोक में भारत-नेपाल सीमा © FEWMD| http://whc.unesco.org/en/list/1513/

खांगचेंदज़ोंगा राष्ट्रीय उदयान

यह राष्ट्रीय उदयान हिमालय वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट के भीतर है और उप-उष्णकिटबंधीय से अल्पाइन पारिस्थितिक तंतर की एक नायाब शरेणी परदर्शित करता है। यह वैश्विक जैव विविधता संरक्षण महत्व की एक पवरत शरृंखला के भीतर स्थित है और सिक्कम राज्य के 25% क्षेतर का आवरण करता है, जिसे भारत की सबसे महत्वपूणर जैव विविधता सांदरता में से एक माना जाता है। यह एक महत्वपूणर संख्या में स्थानिक, दुलरभ तथा संकटगरस्त पौधों और जानवरों की परजातियों का आवास है। इस संपित्त में मध्य / उच्च एशियाई पहाड़ों में दजर की गई सबसे अधिक संख्या में पौधे और स्तनपायी परजातियां हैं।

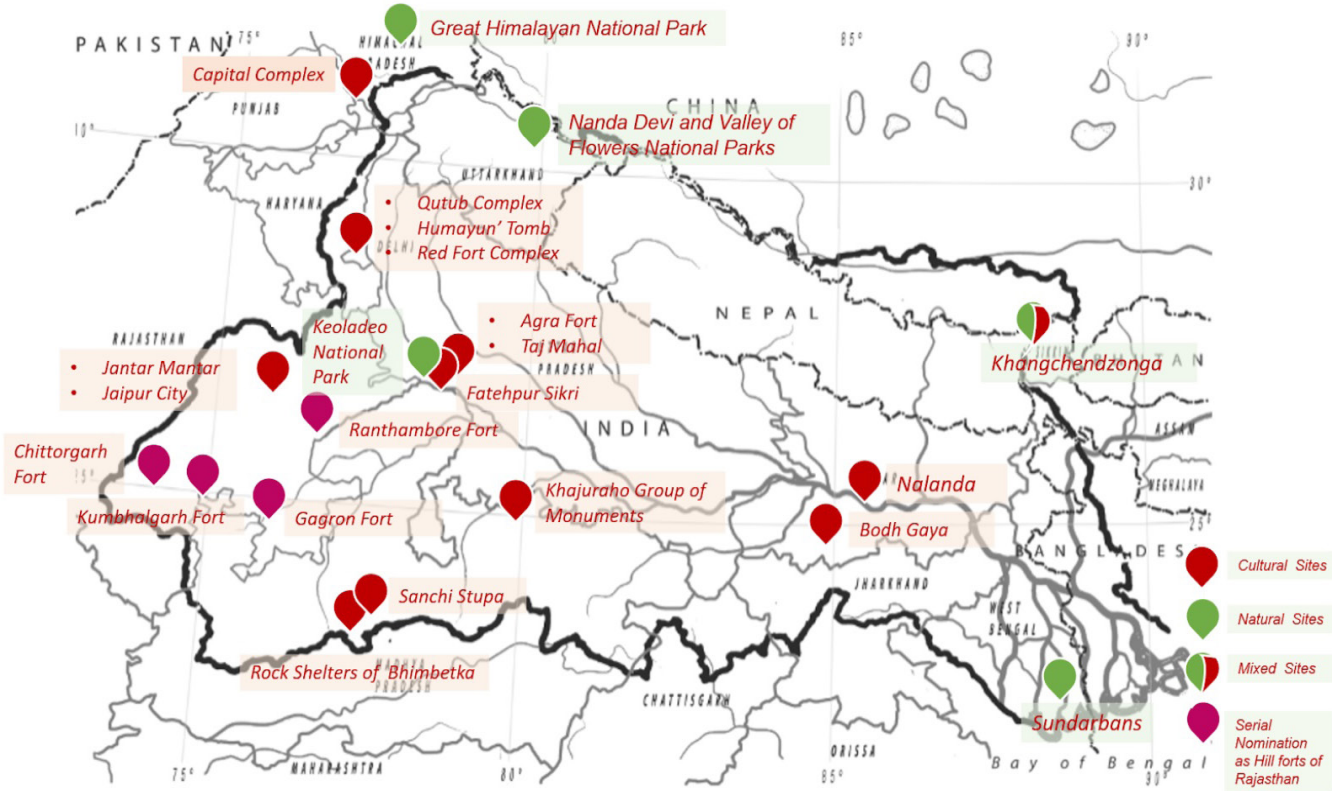

छवि - गंगा बेसिन में यूनेस्को की विश्व साइटों का मानचित्र

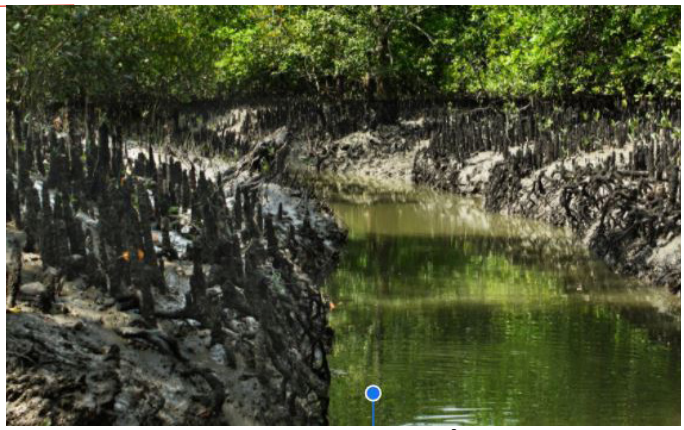

ऊपर की छवि - नजरूल इस्लाम द्वारा दुनिया के सबसे बड़े मैंग्रोव वन सुंदरबन में केओरा के पेड़ों की जड़ें

सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान

सुंदरवन में दुनिया के सबसे बड़े मैंग्रोव वन हैं तथा यह सभी प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों में सबसे अधिक जैविक रूप से उत्पादक हैं। भारत और बांग्लादेश के बीच गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के मुहाने पर स्थित, इसके जंगल और जलमार्ग जीवों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करते हैं, जिसमें कई प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है। मैंग्रोव आवास दुनिया में बाघों की सबसे बड़ी आबादी का समर्थन करता है, जो लगभग उभयचर जीवन के लिए अनुकूलित है, यह लंबी दूरी तक तैरने और मछली, केकड़े और पानी की निगरानी करने वाली छिपकलियों को खिलाने में सक्षम है।

ऊपर की छवि - नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान © यूनेस्को

नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उदयान

पश्चिम हिमालय में स्थित, भारत का फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान स्थानिक अल्पाइन फूलों और उत्कृष्ट प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह समृद्ध विविध क्षेत्र दुर्लभ और लुप्तप्राय जानवरों का भी घर है, जिनमें एशियाई काला भालू, हिम तेंदुआ, भूरा भालू और नीली भेड़ शामिल हैं। फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान का सौम्य परिदृश्य नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी जंगल का पूरक है। साथ में वे ज़ांस्कर और महान हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच एक अद्वितीय संक्रमण क्षेत्र को घेरते हैं।

उपरोक्त छवि - ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क © आईयूसीएन / ग्रीम वर्बायस

ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान संरक्षण क्षेत्र

उत्तरी भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश में हिमालय पर्वत के पश्चिमी भाग में स्थित यह राष्ट्रीय उद्यान उच्च उच्च अल्पाइन चोटियों, अल्पाइन घास के मैदानों और नदी के जंगलों की विशेषता है। यह हिमालय जैव विविधता हॉटस्पॉट का हिस्सा है और इसमें पच्चीस प्रकार की वन विविधता के साथ-साथ जीवों की प्रजातियों का एक समृद्ध संयोजन शामिल है, जिनमें से कई खतरे में हैं। यह जैव विविधता संरक्षण के लिए साइट को उत्कृष्ट महत्व देता है।

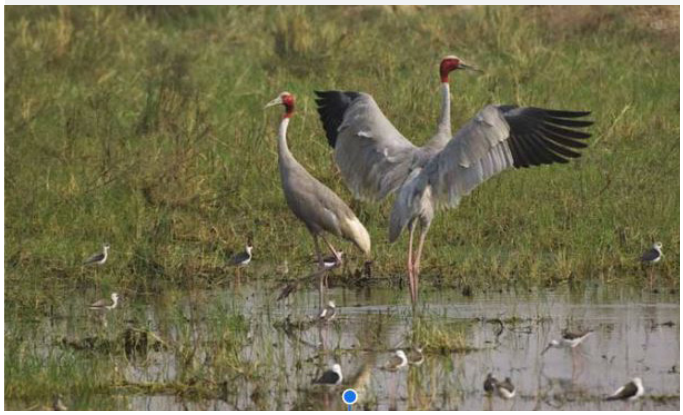

उपरोक्त छवि - सारस क्रेन, ग्रस एंटीगोन, ग्रुइडे परिवार, ग्रुइफोर्मेस ऑर्डर, केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, © यूनेस्को

केवलादेव राष्ट्रीय उदयान

महाराजाओं के काल में यह बतख के शिकार का पुराना रिजर्व हुआ करता था एवं अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और साइबेरिया से बड़ी संख्या में जलीय पक्षियों के लिए प्रमुख शीतकालीन क्षेत्रों में से एक है। दुर्लभ साइबेरियन क्रेन सहित पक्षियों की लगभग 364 प्रजातियों को पार्क में दर्ज किया गया है। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान राज्य में स्थित है, पुरापाषाण प्रवासी जलपक्षी का एक महत्वपूर्ण शीतकालीन मैदान है और गैर-प्रवासी निवासी प्रजनन पक्षियों की बड़ी सभा के लिए प्रसिद्ध है।

ऊपर की छवि - कुतुब मीनार और उसके स्मारक, दिल्ली (भारत) © हमारा स्थान विश्व विरासत संग्रह/जियोरा दान

कुतुब मीनार और उसके स्मारक, दिल्ली

13वीं शताब्दी की शुरुआत में दिल्ली से कुछ किलोमीटर दक्षिण में निर्मित, कुतुब मीनार की लाल बलुआ पत्थर की मीनार 72.5 मीटर ऊँची है, जो 2.75 मीटर व्यास से अपने शिखर पर 14.32 मीटर तक पतली है, और बारी-बारी से कोणीय और गोल फ़्लुटिंग है। आसपास के पुरातात्विक क्षेत्र में अंत्येष्टि भवन शामिल हैं, विशेष रूप से शानदार अलाई-दरवाजा गेट, इंडो-मुस्लिम कला की उत्कृष्ट कृति (1311 में निर्मित), और दो मस्जिदें, जिनमें कुवातु-एल-इस्लाम भी शामिल है, जो उत्तर भारत में सबसे पुरानी है। व इसका निर्माण में कुछ 20 ब्राह्मण मंदिरों से सामग्री का पुन: उपयोग किया गया।

ऊपर की छवि - लाल किला परिसर (भारत) © यूनेस्को / फ्रांसेस्को बंदरिन

लाल किला परिसर

शाहजहाँनाबाद का महल किला - भारत के पांचवें मुगल सम्राट शाहजहाँ की नई राजधानी। लाल बलुआ पत्थर की विशाल दीवारों के लिए नामित, यह 1546 में इस्लाम शाह सूरी द्वारा निर्मित एक पुराने किले, सलीमगढ़ के निकट है, जिसके साथ यह लाल किला परिसर बनाता है। निजी अपार्टमेंट में एक निरंतर जल चैनल से जुड़े मंडपों की एक पंक्ति होती है, जिसे नहर-ए-बेहिश्त (स्वर्ग की धारा) के रूप में जाना जाता है। लाल किला को मुगल रचनात्मकता के शिखर का प्रतिनिधित्व करने के लिए माना जाता है, जिसे शाहजहाँ के अधीन, शोधन के एक नए स्तर पर लाया गया था।

ऊपर की छवि - सांची स्तूप नंबर 2 © केविन स्टैडेज

सांची में बौद्ध स्मारक

भोपाल से लगभग 40 किमी दूर एक पहाड़ी पर, सांची की साइट में बौद्ध स्मारकों (अखंड स्तंभ, महल, मंदिर और मठ) का एक समूह शामिल है, जो सभी विभिन्न संरक्षित राज्यों में स्थित हैं जिनमें से अधिकांश दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के हैं। यह अस्तित्व में सबसे पुराना बौद्ध अभयारण्य है और 12 वीं शताब्दी ईस्वी तक भारत में एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था. महाबोधि मन्दिर बिहार राज्य की राजधानी पटना से 115 किमी दक्षिण और पूर्वी भारत, गया में जिला मुख्यालय से 16 किमी दूर स्थित है।यह भगवान बुद्ध के जीवन और विशेष रूप से आत्मज्ञान की प्राप्ति से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है। भारतीय उपमहाद्वीप में 5वीं-6वीं शताब्दी ईस्वी के महानतम अवशेषों की सम्बन्धित धरोहर इस अवधी से है

ऊपर की छवि - महाबोधि मंदिर © यूनेस्को / अमोस चैपल

बोधगया में महाबोधि मंदिर परिसर

महाबोधि मंदिर परिसर, बोधगया बिहार राज्य की राजधानी पटना से 115 किमी दक्षिण में और पूर्वी भारत में गया में जिला मुख्यालय से 16 किमी दूर स्थित है। यह भगवान बुद्ध के जीवन और विशेष रूप से आत्मज्ञान की प्राप्ति से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है। इस संपत्ति में भारतीय उपमहाद्वीप में ५वीं-६वीं शताब्दी ईस्वी के महानतम अवशेष शामिल हैं, जो इस अवधि से संबंधित हैं।

ऊपर की छवि - खजुराहो स्मारकों का समूह © अनीता रिबार्सकी

खजुराहो स्मारकों का समूह

खजुराहो में मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के दौरान किया गया था, जो 950 और 1050 के बीच अपने चरम पर पहुंच गया था। केवल 20 मंदिर ही बचे हैं; वे तीन अलग-अलग समूहों में आते हैं और दो अलग-अलग धर्मों से संबंधित हैं - हिंदू धर्म और जैन धर्म। वे वास्तुकला और मूर्तिकला के बीच एक आदर्श संतुलन बनाते हैं। कंदरिया का मंदिर भारतीय कला की महानतम कृतियों में से एक है, जो मूर्तियों की प्रचुरता से सजाया गया है।

उपरोक्त छवि - नालंदा महाविहार के उत्खनित अवशेष © रजनीश राजी

नालंदा में नालंदा महाविहार का पुरातत्व स्थल

नालंदा महाविहार स्थल उत्तर-पूर्वी भारत में बिहार राज्य में है। इसमें तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 13 वीं शताब्दी सीई तक के एक मठवासी और शैक्षिक संस्थान के पुरातात्विक अवशेष शामिल हैं। इसमें स्तूप, मंदिर, विहार (आवासीय और शैक्षिक भवन), और प्लास्टर, पत्थर और धातु में महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ शामिल हैं। नालंदा भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है।

*उपरोक्त **छवि - जंतर मंतर, जयपुर***

जंतर मंतर

जयपुर में जंतर मंतर, एक खगोलीय अवलोकन स्थल है जिसे 18 वीं शताब्दी की शुरुआत में बनाया गया था। वे कई वास्तुशिल्प और वाद्य नवाचारों को शामिल करते हैं जिनके द्वारा नग्न आंखों से खगोलीय स्थितियों के अवलोकन किया जा सकता है यह भारत की ऐतिहासिक वेधशालाओं में सबसे महत्वपूर्ण, सबसे व्यापक और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित है। यह मुगल काल के अंत में एक विद्वान राजकुमार के दरबार के खगोलीय कौशल और ब्रह्मांड संबंधी अवधारणाओं की अभिव्यक्ति है।

उपरोक्त छवि - नाहरगढ़ किले से जयपुर में तालकटोरा और चौगान स्टेडियम का दृश्य © DRONAH

जयपुर, राजस्थान

भारत केउत्तर-पिश्चमी राज्य राजस्थान में चारदीवारी वाले शहर जयपुर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिह दिवतीय ने की थी। पहाड़ी इलाकेमें स्थित क्षेतर केअन्य शहरों केविपरीत, जयपुर को मैदानी इलाकों में स्थापित किया गया था और वैदिक वास्तुकला केपरकाश में व्याख्या की गई गिरड योजना केअनुसार बनाया गया था। सड़कों में निरंतर उपनिवेशित व्यवसाय हैं जो केंदर में एक दूसरे को काटते हैं, चौपर नामक बड़े सावरजनिक वगर बनाते हैं। मुख्य सड़कों केकिनारे बने बाजारों, दुकानों, आवासों और मंि दरों केअगरभाग एक समान हैं। शहर की शहरी योजना पराचीन हिंदू और परारंभिक आधुनिक मुगल केसाथ-साथ पिश्चमी संस्कृतियों केविचारों के आदान-परदान को दशारती है।

ऊपर की छवि - आगरा का किला (भारत) © लाइम्स.मीडिया/टिम श्रार्रे

आगरा का किला

ताजमहल के बगीचों के पास 16वीं शताब्दी का महत्वपूर्ण मुगल स्मारक है जिसे आगरा के लाल किले के रूप में जाना जाता है। लाल बलुआ पत्थर का यह शक्तिशाली किला, इसकी 2.5 किमी लंबी बाड़े की दीवारों के भीतर, मुगल शासकों का शाही शहर है। इसमें कई परी-कथा महल शामिल हैं, जैसे जहांगीर पैलेस और शाहजहाँ द्वारा निर्मित खास महल; दर्शकों के हॉल, जैसे दीवान-ए-खास; और दो बेहद खूबसूरत मस्जिदें।

ऊपर की छवि - राजस्थान के पहाड़ी किले © द्रोणाह

राजस्थान के पहाड़ी किले

राजस्थान राज्य में स्थित सीरियल साइट में चित्तौड़गढ़ में छह राजसी किले शामिल हैं; कुंभलगढ़; सवाई माधोपुर; झालावाड़; जयपुर और जैसलमेर। किलों की उदार वास्तुकला, लगभग 20 किलोमीटर की परिधि में, राजपूत रियासतों की शक्ति की गवाही देती है जो 8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र में फली-फूली। किले परिदृश्य द्वारा दी गई प्राकृतिक सुरक्षा का उपयोग करते हैं: पहाड़ियाँ, रेगिस्तान, नदियाँ और घने जंगल। इनमें व्यापक जल संचयन संरचनाएं भी हैं, जो आज भी बड़े पैमाने पर उपयोग में हैं।

ऊपर की छवि-भीमबेटका के रॉक शेल्टर @यूनेस्को

भीमबेटका के रॉक शेल्टर्स

भीमबेटका के रॉक शेल्टर मध्य भारतीय पठार के दक्षिणी किनारे पर विंध्य पर्वत की तलहटी में हैं। बड़े पैमाने पर बलुआ पत्थर के बाहर, तुलनात्मक रूप से घने जंगल के ऊपर, प्राकृतिक शैल आश्रयों के पांच समूह हैं, जो चित्रों को प्रदर्शित करते हैं जो मध्यपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की तारीख तक दिखाई देते हैं। साइट से सटे इक्कीस गांवों के निवासियों की सांस्कृतिक परंपराएं रॉक पेंटिंग में प्रतिनिधित्व करने वालों के लिए एक मजबूत सादृश्य रखती हैं।

ऊपर की छवि- विधानसभा के बाहर, चंडीगढ़, @ बेनेडिक्ट गांदिनी

राजधानी परिसर

ले कॉर्बूसियर के काम से चुनी गई, यह अंतराष्ट्रीय धारावाहिक संपत्ति वाली 17 साइटें सात देशों में फैली हुई हैं और एक नई स्थापत्य भाषा के आविष्कार के लिए प्रशंसापात्र हैं जिसने अतीत के साथ विच्छेद किया है ! ले कॉर्बूसियर ने "रोगी अनुसंधान" के रूप में वर्णित किए जाने के दौरान, उन्हें अर्ध-शताब्दी की अवधि में बनाया था। चंडीगढ़ (भारत) में काम्प्लेक्स डू कैपिटोल, पश्चिमी कला का राष्ट्रीय संग्रहालय, टोक्यो (जापान), ला प्लाटा (अर्जेंटीना) में डॉ. कुरुचेट का घर, और मार्सिले (फ्रांस) में यूनिट डी हैबिटेशन आधुनिक समाधानों और वास्तु तकनीक को दर्शाता है।

ऊपर की छवि- ताज महल © यूनेस्को/एम एंड जी थेरिन-वेइस

ताज महल

सफेद संगमरमर का एक विशाल मकबरा, 1631 और 1648 के बीच आगरा में मुगल सम्राट शाहजहाँ के आदेश से अपनी पसंदीदा पत्नी की याद में बनाया गया, ताजमहल भारत में मुस्लिम कला का गहना है और दुनिया भर में प्रशंसित उत्कृष्ट कृतियों में से एक है। इसके निर्माण के लिए, पूरे साम्राज्य से और मध्य एशिया और ईरान से भी राजमिस्त्री, पत्थर काटने वाले, इनलेयर, नक्काशी करने वाले, चित्रकार, सुलेखक, गुंबद बनाने वाले और अन्य कारीगरों की मांग की गई थी। ताजमहल के मुख्य वास्तुकार उस्ताद-अहमद लाहौरी थे।

उपरोक्त छवि- फतेहपुर सीकरी © यूनेस्को/ब्रूनो पोपे

फतेहपुर सीकरी

सम्राट अकबर द्वारा 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान निर्मित, फतेहपुर सीकरी (विजय का शहर) केवल कुछ 10 वर्षों के लिए मुगल साम्राज्य की राजधानी रही। एक समान स्थापत्य शैली में स्मारकों और मंदिरों के परिसर में भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक जामा मस्जिद शामिल है।

ऊपर की छवि: हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली (भारत) © यूनेस्को / फ्रांसेस्को बंदरिन

हुमायूँ का मकबरा

1570 में निर्मित यह मकबरा विशेष सांस्कृतिक महत्व का है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था। इसने कई प्रमुख वास्तुशिल्प नवाचारों को प्रेरित किया, जिसकी परिणति ताजमहल के निर्माण के रूप में हुई। हुमायूं का मकबरा, दिल्ली के भव्य राजवंशीय मकबरों में से पहला है, जो 80 साल बाद ताजमहल में स्थापत्य शैली के शीर्ष पर पहुंचने के साथ मुगल वास्तुकला का पर्याय बन गया था। हुमायूँ का मकबरा 27.04 हेक्टेयर के परिसर में स्थित है। जिसमें अन्य समकालीन, 16वीं शताब्दी के मुगल उद्यान-मकबरे जैसे नीला गुंबद, ईसा खान, बू हलीमा, अफसरवाला, नाई का मकबरा और वह परिसर जहां हुमायूं के मकबरे के निर्माण के लिए नियोजित कारीगर रुके थे, अरब सराय शामिल हैं।

विश्व विरासत सम्मेलन

1972 के विश्व विरासत सम्मेलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह एक ही दस्तावेज़ में प्राकृतिक संरक्षण और सांस्कृतिक गुणों के संरक्षण की अवधारणाओं को एक साथ जोड़ता है। सम्मलेन के माध्यम से लोगों द्वारा प्रकृति के साथ बातचीत करने के तरीके और दोनों के बीच संतुलन बनाए रखने की मूलभूत आवश्यकता को मान्यता प्रदान की गयी है।

सामरिक उद्देश्य: "पांच सी(C)" विश्वसनीयता संरक्षण क्षमता निर्माण संचार समुदाय

विरासत की रक्षा के लिए एक अंतराष्ट्रीय आंदोलन बनाने का विचार प्रथम विश्व युद्ध के बाद उभरा। विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित 1972 का सम्मेलन दो अलग-अलग आंदोलनों के विलय से विकसित हुआ: पहला सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, और अन्य प्रकृति के संरक्षण से संबंधित हैं।

अधिक जानकारी के लिए

स्कैन कोड

गंगा बेसिन में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

Kumbh Mela

©2015 संजय जगताप द्वारा, भारत

कुंभ मेला (पवितर कुम्भ का त्योहार) पृथ्वी पर तीथरयातिरयो का सबसे बड़ा शांतिपूणर समागम है, जिसकेदौरान परतिभागी पुण्य स्नान करते हैं अथवा पवितर नदी में डुबकी लगाते हैं।

Ramlila

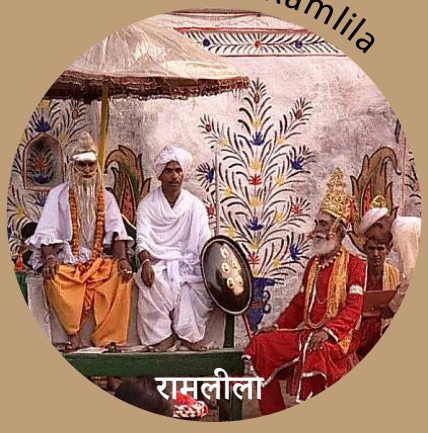

©संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार

रामलीला, शाब्दिक रूप से "राम की ना य-लीला" है, यह दृश्यो की एक शरृंखला में तत्कालीन रामायण महाकाव्य का एक परदशरन है जिसमें गीत, वणरन, गायन और संवाद शामिल हैं। यह शरद ऋतु में अनुष्ठान करम केअनुसार परत्येक वषर आयोजित दशहरा केत्योहार केदौरान पूरे उत्तर भारत में मनाई जाती है।

Yoga

© मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान

पराचीन भारतीय योग अभ्यास के पश्चात दशरन ने भारत में समाज केकायर करने केविभिन्न पहलुओं को परभावित किया है, चाहे वह स्वास्थ्य और चिकित्सा या शिक्षा और कला जैसे क्षेतरो के संबंध में हो।

Tradition of Vedic chanting

©आईजीएनसीए, संस्कृति मंत्रालय

वेदों में 3,500 वर्ष पूर्व आर्यों द्वारा विकसित और रचित संस्कृत काव्य, दार्शनिक संवाद, पौराणिक कथा और अनुष्ठान मंत्रों का एक विशाल संग्रह शामिल है। हिंदुओं द्वारा ज्ञान के प्राथमिक स्रोत के रूप में माना जाता है।

Chhau dance

© 2009 संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

छाउ नृत्य पूर्वी भारत की एक परंपरा है जो महाभारत और रामायण, स्थानीय लोक कथाओं और अमूर्त विषयों सहित महाकाव्यों के अंर्तकथा को लागू करती है। इसकी तीन अलग-अलग शैलियाँ सरायकेला, पुरुलिया और मयूरभंज के क्षेत्रों से आती हैं, पहले दो मास्क का उपयोग करते हैं।

Nawrouz/Novruz/ Nowrouz

© Indiaholiday.com

नववर्ष प्रायः ऐसा समय होता है जब लोग समृद्धि और नई शुरुआत की कामना करते हैं। 21 मार्च वर्ष के आरम्भ का प्रतीक है।

Ramman festival & theatre

©आईजीएनसीए, संस्कृति मंत्रालय

हर साल अप्रैल के अंत में, उत्तराखंड राज्य (उत्तरी भारत) में सलूर-डूंगरा के जुड़वां गांवों को राममन द्वारा चिह्नित किया जाता है, जो एक स्थानीय देवता भूमियाल देवता के सम्मान में एक धार्मिक त्योहार है, जिसके मंदिर में अधिकांश उत्सव होते हैं।

अधिक जानकारी के लिए

स्कैन कोड

गंगा नदी के किनारे घाट

वैदिक साहित्य में जीवित जल के महत्व का वर्णन किया गया है। ये ग्रंथ गंगा की प्रशंसा गंगेय के रूप में भी करते हैं, जिसका अर्थ है "सभी प्रकार की समृद्धि और शांति की दात्री" - स्थिरता की जलीय भावना (ऋग्वेद, 7.45.31)।

उत्तराखंड में 5 मुख्य घाट त्रिवेणी घाट, हर की पौड़ी, गणेश घाट, बिड़ला घाट, कुशावर्त घाट, गौ घाट और विष्णु घाट हैं। हर की पौड़ी घाट, हजारों तीर्थयात्रियों तथा प्रत्येक वर्ष अप्रैल के महीने के दौरान शुरू होने वाले उत्सव कुम्भ मेला (हर बारह साल मे) और अर्ध कुंभ मेला (हर छह साल में) तथा वैसाखी पंजाबी त्योहार (एक फसल उत्सव) के लिए धार्मिक महत्व रखती है

उत्तर प्रदेश में, वाराणसी में नदी के लिए 88 घाट (सीढ़ी) और 96 जल के सामने पवित्र दृश्य (तीर्थ) हैं। इन पांच घाटों में असि, दशाश्वमेध, मणिकर्णिका, पंचगंगा और आदि केशव सबसे शुभ माने जाते हैं। उन्हें पंचतीर्थियों (पांच सबसे पवित्र जल स्थलों) के रूप में भी जाना जाता है। कोलकाता में घाटों को उनकी ऐतिहासिकता और सदियों पुराने व्यापार चैनलों के लिए लोकप्रिय बनाया गया है। जेम्स प्रिंसेप या आउट्राम घाट एक ग्रीक शैली का स्मारक है जो 19वीं शताब्दी के मध्य का है।

राज्य पर्यटन विभाग मकर संक्रांति के अवसर पर नदी के उस पार सबलपुदियारा द्वीप पर पतंग उत्सव का आयोजन करता है। एक और ऐसा घाट अर्मेनियाई घाट है। यह एक अर्मेनियाई, मनवेल हजार मालियान द्वारा बनाया गया था। वह कोलकाता में बसे एक प्रमुख व्यापारी थे और मसालों और कीमती पत्थरों का व्यापार करते थे। उन्होंने 1734 में हुगली नदी के किनारे क्लासिक अर्मेनियाई घाट का निर्माण किया। आजकल यह घाट कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट का भंडारण स्थान है। हालाँकि, अभी भी विरासत की जीवंतता का अनुभव करता है और स्थानीय लोगों के बीच लोकप्रिय फूलों का बाजार है।

गंगा घाट नदी के किनारे कई त्योहारों का गवाह बनते हैं। गंगा नदी में व्यापक रूप से मनाए जाने वाले कुछ सबसे लोकप्रिय त्योहार हैं खुंभ मेला, गंगा दशहरा, गंगा महोत्सव, छठ पूजा और गंगा महोत्सव।

अधिक जानकारी के लिए

स्कैन कोड

वैश्विक धरोहर

विरासत अतीत से हमारी धरोहर है, जो हम वर्तमान में जीते हैं, और जो हम भावी पीढ़ियों को सौंपते हैं। हमारी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत दोनों जीवन और प्रेरणा के अपूरणीय स्रोत हैं।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) मानवता के लिए उत्कृष्ट मूल्य मानी जाने वाली दुनिया भर में सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की पहचान, संरक्षण को प्रोत्साहित करना चाहता है। यह एक अंतराष्ट्रीय संधि में सन्निहित है जिसे विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित कन्वेंशन कहा जाता है, जिसे 1972 में यूनेस्को द्वारा अपनाया गया था।

सांस्कृतिक विरासत

स्मारक: वास्तुशिल्प कार्य, स्मारकीय मूर्तिकला और पेंटिंग के कार्य, एक पुरातात्विक प्रकृति के तत्व या संरचनाएं, शिलालेख, गुफा आवास और सुविधाओं के संयोजन, जो इतिहास, कला या विज्ञान के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के है।

इमारतों के समूह: अलग या जुड़े हुए भवनों के समूह, जो उनकी वास्तुकला, उनकी समरूपता या परिदृश्य में उनके स्थान के कारण इतिहास, कला या विज्ञान के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के हैं।

स्थल: मनुष्य के कार्य या प्रकृति और मनुष्य के संयुक्त कार्य, और पुरातात्विक स्थलों सहित क्षेत्र जो ऐतिहासिक, सौंदर्य, नृवंशविज्ञान या मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के हैं। उनके भवन, उपकरण और अन्य वस्तुएं।

प्राकृतिक विरासत

भौतिक और जैविक संरचनाओं या ऐसे संरचनाओं के समूहों से युक्त प्राकृतिक विशेषताएं, जो सौंदर्य या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के हैं।

भूवैज्ञानिक और भौगोलिक संरचनाएं और सटीक रूप से चिन्हित क्षेत्र जो विज्ञान या संरक्षण के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के जानवरों और पौधों की लुप्तप्राय प्रजातियों के आवास का गठन करते हैं।

प्राकृतिक स्थलों या विज्ञान, संरक्षण या प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के सटीक रूप से चिन्हित प्राकृतिक क्षेत्र।

ग्रंथ सूची

1. अली, जे.आर. और एचिसन, जे.सी., 2005. गरेटर इंडिया। अथर-साइंस रिव्यूज, 72(3-4), पीपी.169-188।

2. डेरिक ओ। लॉड्रिक और नफीस अहमद, 2020। गंगा नदी, एनसाइक्लोपीडिया बिरटानिका; https://www. britannica.com/place/Ganges-River

3. हॉपिकंस, डी.जे. एंड स्टाफ, एम.डब्ल्यू., 1997. मेरियम वेबस्टसर जियोगराफिकल डिक्शनरी। मेरिएम वेबस्टर।

4. हॉवेल, डी.जी. और नॉमारक्र , डब्ल्यू.आर., 1982। पनडुब्बी परशं सकों की तलछट। बलुआ पत्थर निक्षेपण वातावरण, 31, पीपी.365-404।

5. जैन, एस.के., अगरवाल, पी.के. और सिह, वी.पी., 2007. हाइड्रोलॉजी एंड वॉटर रिसोर्सेज ऑफ इंडिया (वॉल्यूम 57)। स्प्रिंगर साइंस एंड बिजनेस मीडिया।

6. जैन, एस.के., अगरवाल, पी.के. और सिह, वी.पी., 2007. हाइड्रोलॉजी एंड वॉटर रिसोर्सेज ऑफ इंडिया (वॉल्यूम 57)। स्प्रिंगर साइंस एंड बिजनेस मीडिया।

7. परकाश, बी., कुमार, एस., राव, एम.एस., गिरी, एस.सी., कुमार, सी.एस., गुप्ता, एस. और शरीवास्तव, पी., 2000. पिश्चमी गंगा केमैदानी इलाकों में होलोसीन टेक्टोनिक मूवमेंट्स और स्ट्रेस फील्ड। करंट साइंस, पीपी.438-449।

8. सरोतः https://nmcg.nic.in/

9. सांघी, आर. और कौशल, एन., 2014. सीमैप्स केमाध्यम से हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा का परिचय। हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा में (पीपी। 3-44)। स्प्रिंगर, चाम।

10. सांघी, आर., 2014. हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा। स्प्रिंगर परकाशन, स्विट्ज़रलैंड

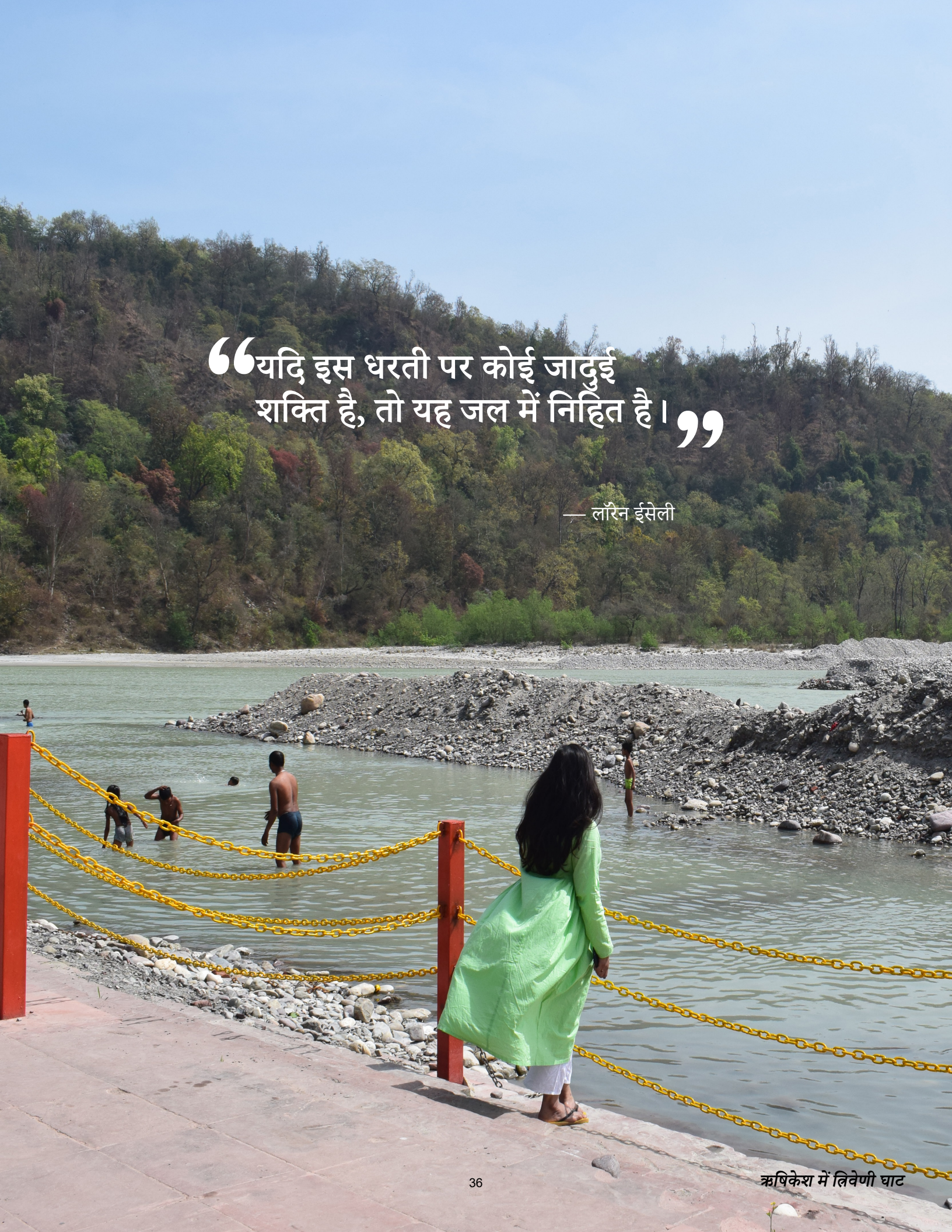

“यदि इस धरती पर कोई जादुई शक्ति है, तो यह जल में निहित है।”

— लॉरेन ईसेली

ऋषिकेश में त्रिवेणी घाट